पूर्वोत्तर सृजन पत्रिका : विशेषज्ञों द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक हिंदी ई-पत्रिका
वर्ष :1, संख्या :1; जुलाई-दिसंबर, 2020

खासी लोककथा

उ मनिक रायतांग

संग्रह एवं अनुवाद: किंट्यूरिटी जिर्वा

उत्तर शिलांग के कुछ मील आगे, एक सुखद पर्वत है, जिसे रायतांग पर्वत के नाम से जाना जाता है। प्राचीन काल से यह एक प्रसिद्ध स्थान है। क्योंकि इस स्थान से एक कथा जुड़ी हुई है।

पुराने जमाने की बात है। एक महान राजा था जिसका कई राज्यों पर शासन चलता था, जिसके अधीन अनेक जातियों के लोग थे। उसकी ऊंची हैसियत के अनुरूप ही उसकी रानी अत्यंत सुंदर और रमणीय थी। उसका रूप लचीला और चुस्त था, उसका रंग सोने-का सा था, कमर तक उसके बाल लहराते थे, उसके होंठ अनमोल मुंगे की तरह लाल थे, उसकी गति बड़ी आकर्षक थी, लासुबोन फूल की तरह उसकी सुगंध थी और देवी के समान उसका मुख था।

एक दिन राजा को अपना राज्य छोड़कर लम्बे समय के लिए विदेश जाना पड़ा। जाने से पहले उन्होंने अपना काम, अपनी जिम्मेदारियाँ मंत्रियों को सौंप दीं। वह बड़े भारी मन से अपनी युवा रानी से अलग हुआ। दोनों की नई-नई शादी हुई थी।

इस राज्य में एक अनाथ व्यक्ति था जिसके कोई भी रिश्तेदार जीवित नहीं था। वह अकेला था और किसी से भी बात नहीं करता था। उसे मनिक रायतांग के नाम से जाना जाता था। उसके परिवार वालों और सब रिश्तेदार महामारी के कारण मर गए थे। इस घटना के कारण मनिक रायतांग हमेशा दुखी रहता था। दिन में वह मैले-कुचैले कपड़े पहनता था। शरीर पर राख से पुताई कर फकीरों की तरह घूमता रहता था। शेष दुनिया को यह पता ही नहीं था कि रात होने पर वह नहाने के बाद साफ-सुथरे कपड़े और गहने पहनता था। रात में वह अलग व्यक्ति बन जाता था। उसने अपने से वादा कर रखा था कि दिन में वह गन्दा कपड़ा पहनकर अपने परिवार वालों की मृत्यु के कारण शोक में जीवन बिताएगा। लेकिन रात में वह अपने आपको सजाकर बांसुरी बजाता रहता था। उसे संगीत का शौक और अच्छा ज्ञान था। उसकी बांसुरी से मधुर सुर निकलता था और उसका लय बहुत आकर्षक होता था। रायतांग ऐसे समय में बजाता था जब पूरा गाँव रात की नींद में सो रहा होता था।

एक रात रानी को यह बांसुरी की आवाज सुनाई दी। वह सो नहीं पाई। उसको लगा यह परियों की आवाज थी जो जंगलों और नदियों में निवास करती थीं। जब यह आवाज रुक गई तो रानी को बहुत अकेलापन महसूस हो रहा था। अगला दिन जब आया तो उसे हमेशा उस आवाज या धुन की याद आती थी और वह रात होने का इंतजार करती थी ताकि वह मधुर ध्वनि उसको फिर से सुनाई दे। उस सुरीली आवाज को सुनने के लिए अनेक रात वह जागती रही। वह सुंदर-सुंदर चीजें कल्पना कर रही थी। रानी को ऐसी सुरीली आवाज जीवन में कभी नहीं सुनाई पड़ी थी, जो उसके हृदय को स्पर्श करती। जब भी यह आवाज रुक जाती तो उसे बहुत तनहाई महसूस होती थी। उसके मन में जिज्ञासा पैदा हुई कि यह आवाज कहाँ से आयी। जिज्ञासा इतनी बढ़ती जा रही थी कि एक रात वह अपने महल से निकली और जिस तरफ से वह ध्वनि आयी, उस तरफ जाने लगी। पीछा करते-करते रानी को बहुत आश्चर्य हुआ कि वह ध्वनि रायतांग की झोपड़ी से आ रही थी। उसने रायतांग के घर के समीप जाकर, दीवार के छेद से अंदर झांका। वह रायतांग के रूप-सौंदर्य को देखकर दंग रह गई। रायतांग का सौंदर्य और कोमलता रानी को और करीब खींचने लगी। रानी ने अपनी हैसियत, अपने अनुपस्थित पति को भूलकर रायतांग का दरवाजा खटखटाया लेकिन वह अपनी बांसुरी की धुन में इतना डूब गया था कि सुन नहीं सका।

रानी ने उसका दरवाजा तोड़ा और अंदर चली गई। रानी को अंदर आते देख रायतांग चौंक गया। रानी उसको अपनी ओर खींचना चाहती थी पर रायतांग ने ध्यान नहीं दिया। उसने रानी को रोकने की बहुत कोशिश की लेकिन नहीं रोक पाया। वह कोशिश नाकाम कर देती थी और अंत में रायतांग रानी के प्रेमजाल में फंस जाता था।

महीने बीत गए और राजा के लौटने का समय आ गया। राजा के लौटने की खुशी में राज्य की समस्त प्रजा खुशी मनाने की तैयारी कर रही थी। रानी को छोड़कर, सब लोग प्रसन्न हो रहे थे। रानी को गुमसुम होते देखकर लोगों को आश्चर्य हुआ। एक दिन रानी को दुख होने का कारण सामने प्रकट हुआ जब रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया। राजा के पहुँचने तक रानी के संरक्षक ने उसको एक कमरे में बंद करके रखा। रानी को पुत्र के पिता का नाम पूछा गया पर वह चुप बैठी रही। जब राजा पहुँचा और इस खबर को सुना तो वह बहुत दुखी और शर्मिंदा हुआ, साथ ही साथ उसको गुस्सा भी आया। राजा ने संकल्प लिया कि उस व्यक्ति को कड़ी सजा दी जाएगी जिसने रानी के सम्मान को मिट्टी में मिलाया, लेकिन रानी ने उसका नाम लेने से इनकार कर दिया।

राज्य के कल्याण और राजा की पूर्ति के लिए उस अपराधी का पता लगाना आवश्यक था। तब राजा ने दरबार में सभा बुलाने का आदेश दिया। उसने राज्य के सभी पुरुषों को अगली सुबह महल में इकट्ठा करने का हुक्म सुनाया जिसमें

प्रत्येक व्यक्ति को हाथ में एक-एक केला लेकर उपस्थित होना था। राजा का दावा था कि बच्चा जिस व्यक्ति से केला ले लेगा, वह उसका पिता होगा। अगले दिन राजा की आज्ञा के अनुसार सारे पुरुष महल में जमा हुए। बच्चे को दरबार के मध्य में फर्श पर चटाई बिछाकर लिटा दिया गया। घंटों तक सभी पुरुष एक-एक करके बच्चे के आगे केला बढ़ाते,पर बच्चे ने किसी से केला नहीं लिया। कुछ समय बाद राजा ने मंत्रियों से पूछा कि क्या कोई व्यक्ति है जो इस सभा में अनुपस्थित है। तब युवकों ने याद दिलाया कि मनिक रायतांग सभा में अनुपस्थित है। मंत्रियों ने उसे बुलाना जरूरी नहीं समझा क्योंकि वह अधिकतर समाज से हट कर रहता था और कोई उसे बात भी नहीं करता था परंतु राजा ने तुरंत रायतांग को बुलवाया।

रायतांग हाथ में एक केला लेकर उपस्थित हुआ। वह बच्चे की ओर बढ़ रहा था। रायतांग को देखते ही बच्चे का चेहरा चमक उठा और उसने उसके हाथ से केला भी लिया। यह दृश्य देखकर लोगों की आँखें फटी-की-फटी रह गईं। राजा को बड़ी शर्मिंदगी और दुख महसूस हुआ जब उसने पाया कि उसकी पत्नी ने एक बहिष्कृत व्यक्ति को अपना प्रेमी चुना है। राजा ने तुरंत अपने मंत्रियों को फैसला सुनाने का आदेश दिया कि *उ रायतांग* को राजप्रासाद के फाटक के सामनेवाली पहाड़ी पर आग में ज़िन्दा जलाया जाए तथा उसके लिए न कोई धार्मिक रीति-रिवाज या अंतिम संस्कार किया जाय और न ही कोई व्यक्ति उसकी हड्डियों को दफनाने जाएगा।

रायतांग ने इस फैसले को उदासीनता से स्वीकार किया यह मानकर कि उसकी तकदीर में यही लिखा हुआ है। परंतु रायतांग ने एक वरदान मांगा कि वह स्वयं चिता बनाए और अपने लिए एक शोक-गीत बजाए।किसी ने उसकी मांग को मना नहीं किया और उसे अनुमति दी गई। अगली सुबह रायतांग ने सूखी लकड़ियाँ जमाकर चिता तैयार की। उसकी चिता किसी राजा या महान व्यक्ति की चिता से भी बड़ी थी। चिता तैयार होने के बाद, रायतांग अपनी झोपड़ी में लौट गया। वह उन मैले-कुचैले कपड़े से मुक्त होकर नये और सुंदर आभूषण पहनकर जा रहा था। हाथ में वह बांसुरी लेकर घर से निकल रहा था और चिता की ओर चलते-चलते वह बांसुरी बजा रहा था। वह हृदयस्पर्शी आवाज, वह सुरीली धुन राज्य के सभी लोगों को आकर्षित करती थी। उस मधुर संगीत ने सब के हृदय को स्पर्श किया। सब लोग अपने घर से निकल गए और आश्चर्यजनक ढंग से रायतांग के बदले रूप को देखने लगे। उसके रहस्यमय और शानदार संगीत से, सभी द्रवित हो गए।

जैसे ही रायतांग चिता के सामने पहुँचा, उसने लकड़ियों में आग लगायी। एक बार और, अपनी बांसुरी बजायी और उसने आग के तीन चक्कर लगाते हुए बांसुरी को मिट्टी पर उल्टा धंसाकर आग में कूद पड़ा।

जब यह घटना बाहर घट रही थी तब रानी अपने कक्ष में कैद थी। जब उसने बांसुरी की आवाज सुनी, तब उसको यकीन हुआ कि यह सुरीली धुन रायतांग की ही थी। उसको पता चल गया था कि राज खुल गया है और रायतांग को सजा दी जा रही है। रानी की वेदना ज्यादा गहरी होती गई। पहले की तरह ही बांसुरी की ध्वनि रानी को खींच रही थी और परामानवीय शक्ति से रानी दरवाजा तोड़कर महल से चुपचाप बाहर निकल गई। वह अपना मुँह छुपाए भीड़ में रास्ता बनाते हुए पहाड़ी की ओर चल पड़ी। जब रानी चिता के पास पहुँची तब रायतांग आग में कूद चुका था। उसी समय रानी भी चिता में कूद गयी।

इस समय राजा अपने कमरे में शांत बैठा था। उसे रानी के भाग निकलने की खबर न थी। परंतु जब रानी आग में कूदी थी, ठीक उसी समय राजा के कक्ष में कुछ अजीब-सा हुआ था। रानी का शॉल आश्चर्यजनक ढंग से उसके पैरों पर उड़कर गिरा, यद्यपि ऐसी तेज हवा भी नहीं थी कि शॉल को उड़ा सके। तब राजा को महसूस हुआ कि जरूर उसकी पत्नी को कुछ हो गया है। वह रानी के कमरे में देखने गया पर वह वहाँ नहीं थी। राजा को पता था कि उसकी पत्नी कहाँ गयी
होगी। वह तुरंत पहाड़ की ओर गया, परंतु जब तक वह पहुँचा, तब तक काफी देर हो चुकी थी, रानी जलकर मर चुकी थी।

उस पहाड़ पर जिस जगह उन दो प्रेमियों की मृत्यु हुई थी, आज वहाँ उल्टे बांस के झुरमुट विद्यमान हैं। ये नीचे की ओर बढ़ते हैं। कहते हैं, ये बाँस रायतांग की बांसुरी से ही जनमे हैं।

रायतांग की बांसुरी जिसे शाराती (Sharati) के नाम से जाना जाता है खासी का लोकप्रिय वाद्ययंत्र बन चुकी है। उसी समय से खासी लोगों ने इस वाद्ययंत्र को अपनाया, शोक मनाने में इसका प्रयोग किया जाता है।

टिप्पणी: यह कथा श्रीमती राफी की कृति *'खासी फोल्क टेल्स'* से लेकर अनूदित की गयी है। यह एक प्रेमपरक लोक-कथा है। इसमें मनिक रायतांग और रानी के बीच के प्रेम का चित्रण देखा जा सकता है। इसमें दोनों नायक-नायिका के रूप में प्रकट हुए हैं। केवल नायक-नायिका का प्रेम ही नहीं, बल्कि मनिक रायतांग का संगीत के प्रति प्रेम भी दिखाई पड़ता है। शाराती यंत्र उससे ही उत्पन्न हुआ है।

संपर्क सूत्र:
शोधार्थी, हिंदी विभाग
पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (नेहू), शिलांग